Dated
17/8/2020

B.A Part - 2 (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जी० के० कॉलेज सिरौली

देकार्त आधुनिक दर्शन के पिता कहे जाते हैं, व्याख्या करें,

Ans. ऐसे देकार्त को आधुनिक दर्शन का पिता कहा जाता है, क्योंकि देकार्त ने पहली बार दर्शन के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रणाली को जन्म दिया था। देकार्त ने कहा था कि प्लेटो और अरस्तु को पढ़कर हम दार्शनिक नहीं बन सकते, यदि हम स्वतंत्र निर्णय न कर सकें। देकार्त के अनुसार गणित में निश्चयात्मकता है और इसके सिद्धांत निर्विवाद और निःसंदेह सत्य हुआ करते हैं। अतः दर्शन की नींव अगर गणित के समान सुदृढ़ हो तो इसके दोषों को दूर कर निःसंदेह सत्य की प्राप्ति की जा सकती है। देकार्त ने चार नियमों वाली एक निर्णायक नियम बनाये और इसी मापदंड के सहारे इन्होंने दर्शनशास्त्र में निस्संदेह और निर्विवाद सत्य की प्राप्ति का नया रास्ता अपनाया। देकार्त का मानना था कि परीक्षा के बिना सत्य केवल अंधविश्वास या भ्रम है। अतः इन्होंने सत्य की परीक्षा के लिए सभी चीजों पर संदेह करना शुरू किया। देकार्त की दार्शनिक प्रणाली को गणितीय प्रणाली (Mathematical Method) भी कहते हैं; क्योंकि देकार्त ने अपनी इस प्रणाली में गणित का अनुकरण करने का प्रयास किया है। दो मुख्य सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है

(क) बुद्धि में यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का सामर्थ्य है अर्थात बुद्धि ही यथार्थ ज्ञान की जननी है।

(ख) बुद्धि में यथार्थ और अयथार्थ ज्ञान को पृथक करने का भी सामर्थ्य है। अर्थात बुद्धि ज्ञान और भ्रम में भी भेद कर सकती है।

—x—